सेमीनार के लिए बाबा रोज़–2 प्वाइंट्स बताते रहते हैं। बच्चों को ऐसे सर्विस करनी चाहिए। यह करना चाहिए। मित्र–सम्बंधी आदि जो कोई भी मिले उनको ही पहले–2 अल्फ की पहचान देनी है। बाबा रोज़ इस पर समझाते रहते हैं। दुनियां सतोप्रधान थी, अब तमोप्रधान बनी है। फिर सतोप्रधान कैसे बनेगी? तुम बनो तो दुनियां भी बनेगी। तुम सुधरो तो दुनियां भी सुधरेगी। तुम बच्चों में ही सारी ताकत चाहिए। तुम ही पवित्र बनो तो सारी दुनियां पवित्र बन जावेगी। सारे विश्व का मदार तुम बच्चों पर है। शिवबाबा कहते हैं कि मुझे थोड़े ही नई दुनियां में जाना है। पुरानी चीज़ को तमोप्रधान, नई चीज़ को सतोप्रधान कहा जाता है। विनाश भी ज़रूर होना ही है। कलियुग के बाद ही सतयुग आवेगा, जिसको ही हैविन कहते हैं। आसुरी दुनियां ज़रूर विनाश हो जावेगी। अभी तो सारी ही तुम बच्चों को रोशनी मिली है। ज्ञान का तीसरा नेत्र देने वाला भी बाप ही है। उस बाप को ही याद करना है कि सतोप्रधान बन जावें। ना पढ़ने वाले तो साधारण प्रजा ही बन जावेंगे। अच्छी रीति पढ़ने और पढ़ाने वाले ही ऊँच पद पावेंगे। बाकी तो पवित्र ज़रूर बनना ही है। बाप को याद करना है। भक्तिमार्ग में कितने धक्के खाते हैं। सतयुग में तो भक्तिमार्ग होता ही नहीं है। जब आधा समय पूरा होता है तब भक्तिमार्ग शुरू होता है। शुरू में सतयुग में भक्ति किसकी करें? ल.ना. का ही तो राज्य है ना। फिर भक्ति किसकी कौन करेंगे? इतने ढेर मंदिर हैं। सतयुग में तो एक भी मंदिर नहीं होगा। है भी बहुत साधारण सी बात समझने की। बार–2 अपने को आत्मा समझकर बाप को याद करना है। कर्म करते हुए भी बाप को तो याद कर सकते हो ना। अगर याद नहीं पड़ता है तो प्रैक्टिस करो। हम बाबा को याद करता हूँ फिर मेरे विकर्म विनाश हो जावेंगे। देह सहित सब कुछ भूलना है। याद ही से बेड़ा पार होगा। पढ़ाई सोर्स ऑफ इन्कम है। यह बहुत साधारण पढ़ाई है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी कितनी सिम्पल है। तुम्हारे लिए सारी दुनियां का विनाश होना है। तुमको पवित्र राजधानी चाहिए। अनेक बार तुमने राज्य लिया है और गंवाया है। दुनियां नई थी तो भारत ही स्वर्ग था। अब नर्क है। फिर भारतवासी ही स्वर्गवासी बनेंगे। सतोप्रधान बनने लिए तो बाप कहते हैं कि मामेकम् याद करो। खाना पकाओ तो भी याद करते रहो। श्रीनाथ द्वारे में तो मुंह ही बंद कर देते हैं। श्रीनाथ को याद करके भोजन बनाते हैं। अंदर में कहना होता है कि हम यह भोजन उनके लिए बनाते हैं। तुम्हारा भी अंदर ही अंदर में चलना चाहिए। जगन्नाथ पर तो चावल की हुंडी चढ़ती है। श्रीनाथ पर तो बहुत सारे माल बनते हैं। अभी तुम बेगर लाइफ में हो ना। फिर तुमको ही वहाँ पर दूसरे जन्म में बहुत माल मिलता है। बाप कहते हैं कि कृष्ण वाली आत्मा के बहुत जन्मों के भी अंत के जन्म के शरीर में मैं प्रवेश करता हूँ। सीधी सी बात है। बहुत जन्म तो मनुष्य के ही बतावेंगे ना। मैं इनमें प्रवेश करता हूँ। फिर यही वो बनते हैं। बिल्कुल ही इज़ी सी बात है। तुम भी देवता थे। बहुत जन्म तो उनके ही गिनेंगे जो कि बहुत अच्छी रीति पढ़ते होंगे और भक्ति भी बहुत सारी की होगी। तुम जानते हो कि कृष्ण की आत्मा को पहले–2 सूर्यवंशी फिर चंद्रवंशी... अब फिर पहले नम्बर में जावेंगे। तुमको भी उतनी ही खुशी होनी चाहिए। शुरू में जो नव लाख होंगे तो वो भी तो पुरुषार्थ करके दिखावेंगे ही ना। सिर्फ दैवी गुण धारण करने हैं और नष्टोमोहा बनना है। समझ की बात है कि हमको घर जाना है। इस पुरानी दुनियां में तो रखा ही क्या है। यहाँ रहे हुए पर भी मोह–ममत्व नहीं (रहे)। कोई बीमार है वा शरीर भी छोड़ दे तो भी दुःख ना होना चाहिए। तुम हो सर्वोत्तम ब्राह्मणकुल भूषण, फिर देवता बन जाते हो। इस समय तुम बच्चों को नालेज है। दूसरा फिर सभी की सेवा भी करते हो। यह जन्म तुम्हारा दुर्लभ गाया जाता है ना, जिससे ही फिर तुम देवता बनते हो। विश्व को सेवा से तुम उत्तम से उत्तम बनाते हो। नई दुनियां तो बाप ही बनावेंगे ना। कृष्ण तो देहधारी है। उनको भगवान नहीं कहा जा सकता है। मनुष्य को भगवान नहीं कहा जा सकता है। गुडनाइट।